



मौत का पहाड़

शब्द : ग्रायत्रीमदुनदृत
चित्र : बाम वाईकंकन

इचिशो और चिशो दो भाइ थे। दिन-भर के अपने रवेतों में काम करते थे।



शाम को जब वे घर लौटते, उनकी माँ सुमी मुस्कराते हुए उनका स्वागत करती थी।



पर कुछ दिनों से इचिशो और चिशो उदास रहने लगे थे...



...और वे अक्सर खिड़की में से, दूर कुहरे से धिरे पहाड़ की ओर देखते रहते थे।

70 वर्ष के होते ही सब बूढ़ों को उनके बेटे इसी पहाड़ पर ला कर छोड़ जाया करते थे।



यह नियम उस राज्य के राजा ने बनाया था। इसके यीछे विचार यह था कि जब बूढ़ों में योग्यता और ताकत खत्म हो जाती है, वे परिवार और समाज पर बोझ बन जाते हैं।

इस नियम में यह बात भुला दी गयी थी कि बूढ़े लोग अपना वर्षों का अनुभव और ज्ञान अपने बच्चों को दे सकते हैं।



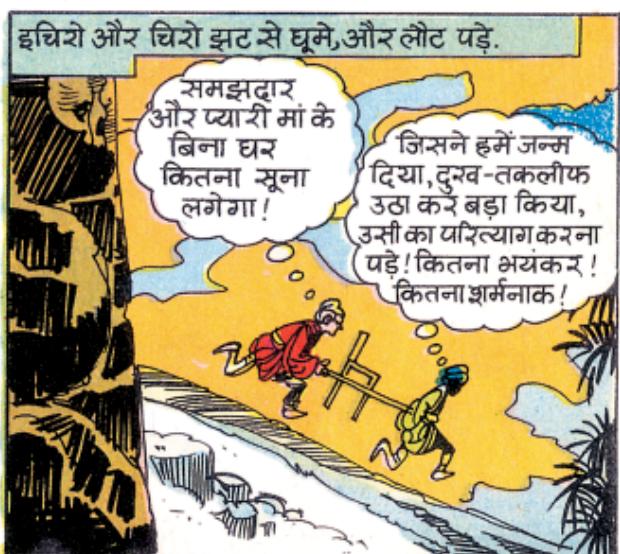
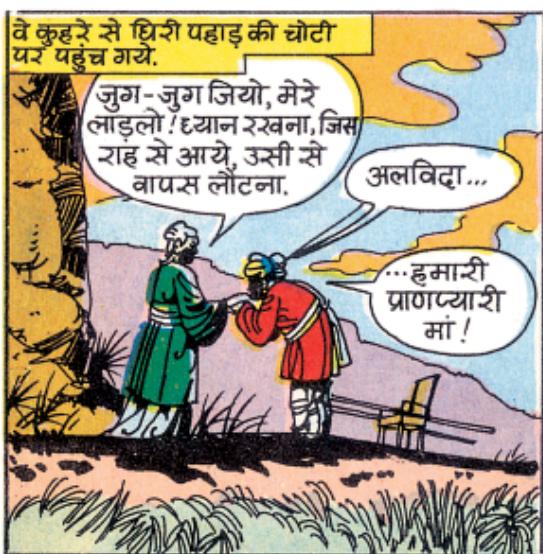
और एक शाम, सुमी ने अपने बेटों से कहा -

मेरे बच्चों, आज यूणीमासी है। आज मैं 70 वर्ष की हो गयी। अब इस राज्य के नियम के अनुसार...



...कल तुम सुझे उस पहाड़ पर पहुंचा आओ, जहाँ से कोई लौट कर नहीं आता।

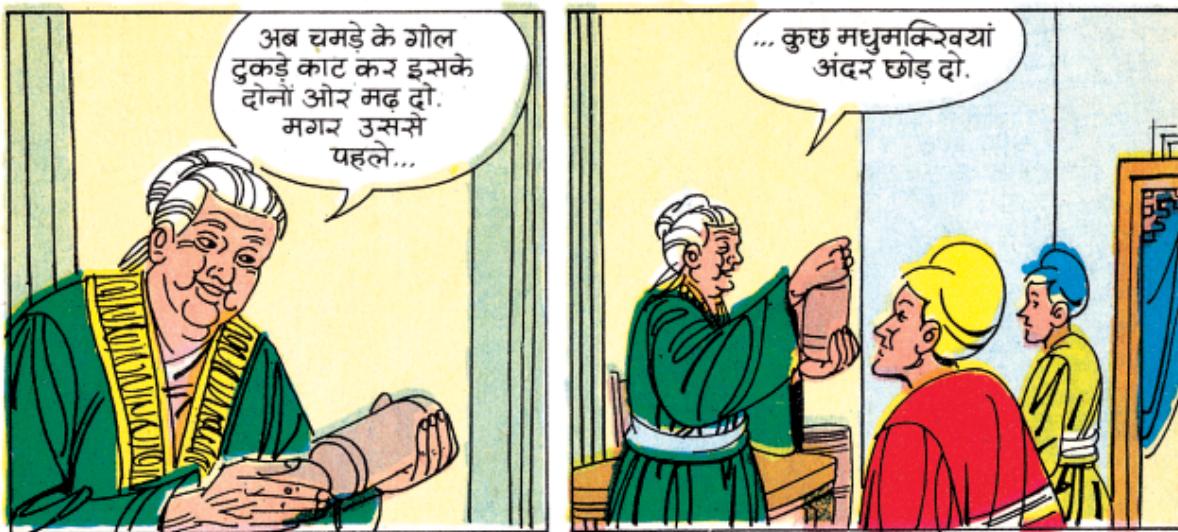












जब शाजा जी ने उत्सुकता से उस अनोखे ढोल को हाथ में उठाया, तो अंदरवाली मधुमक्खियां धबशा कर उड़ीं और चमड़े से टकराने लगीं, जिससे...

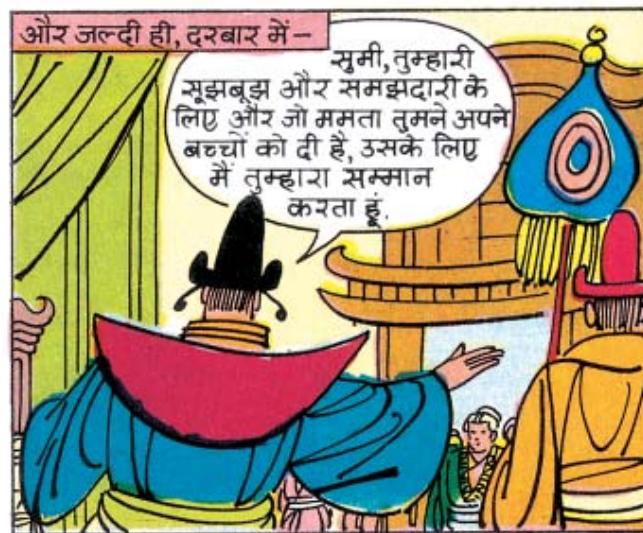




इचिशो और चिशो,
आज मुझे बहुत बड़ी
सीरब मिली है। मैं अपने
बनाये उस निर्दय नियम
को रद्द करता हूँ।



महाराज, कृपा करके इन गांववालों के
दिये हए जुर्माने को वापस लौटा दीजिए।
क्योंकि ये बेचारे तो गरीब से गरीबतर
हो गये हैं।



क्योंकि अब किसी अभागे बेटे को अपने प्यारे मां-बाप को वहां छोड़ने नहीं आना यड़ता।

